प्रकाशनार्थ

गोरखपुर, 08 सितम्बर। गोरखनाथ मन्दिर में **युगपुरुष ब्रह्मलीन महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज की 48वीं पुण्यतिथि एवं ब्रह्मलीन महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज की तृतीय पुण्यतिथि समारोह** के अन्तर्गत '' **शिक्षा और स्वास्थ्य : सेवा भी–धर्म भी** '' **विषयक संगोष्ठी के मुख्य वक्ता** उत्तर प्रदेश सरकार के उपमुख्यमंत्री एवं शिक्षा मंत्री माननीय **डॉ0 दिनेश शर्मा** जी ने कहा कि गोरक्षपीठ ने धर्म और कर्म का एक साथ समावेश कर आधुनिक भारत में एक ऐसी परम्परा प्रस्तुत की है जो भारत की सनातन परम्परा रही है। ईश्वर हमेंशा धर्म के साथ कर्म का पक्षधर रहा है। ईश्वर हमेशा सबसे बड़ा एवं कठिन काम अपने सबसे प्रिय को सौंपता है और उसने इस पीठ के पीठाधीश्वर महन्त योगी आदित्यनाथ जी महाराज को उत्तर प्रदेश के 22 करोड़ जनता के लोक कल्याण का कार्य सौंपा है। मैं सौभाग्यशाली हूॅ कि मुझे एक अत्यन्त पवित्र और ऐसे सन्त के साथ कार्य करने का अवसर मिला है जिसका पूरा जीवन ही औरो को समर्पित है। जिस सन्त ने शिक्षा और स्वास्थ्य को सेवा और धर्म मानकर इस पूर्वी उत्तर प्रदेश में सामाजिक परिवर्तन के उस अभियान का वाहक बना है जिसे महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज एवं महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज ने प्रारम्भ किया था जो आज का भी युग धर्म है, और 'सबका साथ–सबका विकास' मंत्र का वास्तविक व्यवहारिक रूप है। श्रीगोरक्षपीठ के नेतृत्व में पूर्वी उत्तर प्रदेश में शिक्षा और स्वास्थ्य को मानव सेवा का आधार मानकर लोक कल्याण एवं धर्म की जो परिभाषा अपने कर्मो द्वारा दी जा रही है वह देश और दुनियां के लिए अनुकरणीय है। यह पीठ शिक्षा, चिकित्सा के विविध गतिविधियों का केन्द्र है। एक तरफ संस्कृत विद्यालय तो दूसरे तरफ पालिटेक्निक, एक तरफ महिला शिक्षा के लिए शिक्षण संस्थाओं की श्रृंखला तो दूसरी तरफ सहशिक्षा युक्त उच्च शिक्षण संस्थान, एक तरफ योग प्रशिक्षण संस्थान तो दूसरी तरफ आयुर्वेदिक एवं एलोपैथिक चिकित्सालय, एक तरफ महायोगी गुरू गोरक्षनाथ सहित हिन्दू धर्म के विविध देवी–देवताओं की उपासना तो दूसरी तरफ नर सेवा–नारायण सेवा का मंत्र, यहीं गोरक्षपीठ एवं गोरखनाथ मन्दिर वैशिष्ट्य है जो इस पीठ को अन्य धार्मिक केन्द्रों से अलग प्रतिष्ठित करता है। यहां भगवान को प्रसाद चढ़ाने के साथ–साथ भारत माता के समक्ष योग्य नागरिक निर्माण का प्रसाद भी चढ़ाया जाता है। शिक्षा और चिकित्सा के साथ संस्कार एवं सेवा भाव का जो स्वरूप इस पीठ ने खड़ा किया है हर समाज को आगे बढ़ने और सुखी रहने के लिए शिक्षा और चिकित्सा का यहीं स्वरूप खड़ा करना होगा।

उन्होंने आगे कहा कि योग्य नागरिक निर्माण जिस धार्मिक पीठ का संकल्प हो, वह धार्मिक पीठ राष्ट्र निर्माण का केन्द्र होती है, राष्ट्र शक्ति का केन्द्र होती है, सामाजिक शक्ति का केन्द्र होती है। इसीलिए गोरक्षपीठ सामाजिक जनजागरण और सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के वैचारिक अधिष्ठान का महत्वपूर्ण केन्द्र है। आज उत्तर प्रदेश का सौभाग्य है कि उसे ऐसे पीठ के पीठाधीश्वर का नेतृत्व मिला है जो मानव कल्याण की बात करता हो, लोक कल्याण के लिए दिन रात जीता–मरता हो, प्राणियों में सद्भाव की स्थापना हेतु निरन्तर प्रयत्नशील हो, धर्म में नैतिकता और सदाचार को महत्व देता हो। भारतीय परम्परा प्रारम्भ से शिक्षा और स्वास्थ्य को सेवा और धर्म मानती रही है। शिक्षा के द्वारा ही व्यक्ति का निर्माण, राष्ट्र का निर्माण सम्भव है और इस दिशा में उत्तर प्रदेश की सरकार योजनापूर्वक आगे बढ़ रही है।

मुख्य अतिथि नैमिसारण्य से पधारे स्वामी विद्याचैतन्य जी महाराज ने कहा कि शिक्षा ही हमारी पूजा है। शिक्षा का सही स्वरूप ही धर्म के सही स्वरूप से परिचत करता है। महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज एवं महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज ने धर्म को लोक कल्याण का प्रर्याय माना। राष्ट्रधर्म को अपना धर्म माना। समाज के दलित, असहाय, गरीब, पिछड़ों सहित वंचित समाज तक शिक्षा और स्वास्थ्य को सेवा मानकर पहुॅचाया। उनके सुयोग्य उत्तराधिकारी गोरक्षपीठाधीश्वर एवं उ0प्र0 के माननीय मुख्यमंत्री महन्त योगी आदित्यनाथ जी महाराज ने अपने

गुरूजनों के सेवा धर्म को आगे बढ़ाया है। आज जब प्रदेश सरकार की कमान उनके हाथ में है तो वहॉ भी शिक्षा और स्वास्थ्य को सेवा और धर्म मानकर ही योजनाएं बनायी जा रही है और क्रियान्वित की जा रही है। भारत का सन्त समाज महन्त योगी आदित्यनाथ के लोककल्याणकारी एवं सेवाभावी शासन पर गौरवान्वित है।

अध्यक्षता करते हुए परमार्थ आश्रम हरिद्धार के अध्यक्ष एवं भारत सरकार के पूर्व गृह राज्यमंत्री स्वामी चिन्मयानन्द जी महाराज ने कहा कि शिक्षा और स्वास्थ्य दोनों मानव जीवन एवं संस्कृत एकही पहलू हैं। शिक्षा और स्वास्थ्य वास्तव में सेवा भी और धर्म भी है। यह पहले भी ऐसा ही था आज का धर्म भी ऐसा ही है। गोरक्षपीठ के पीठाधीश्वर युगपुरूष ब्रह्मलीन महन्त दिग्विजयनाथ जी महराज एक धर्मगुरू होने के साथ–साथ स्वाधीनता संग्राम सेनानी भी थे। गुलाम भारत में उनकी दृष्टि न केवल भारत को स्वतंत्र कराने पर टिकी थी अपितु स्वतंत्र भारत, सम्प्रभु भारत, स्वाभिमानी भारत, समृद्ध भारत, समर्थ भारत बनाने के लिए भी वे प्रत्यनशील थे। युगद्रष्टाऋषि भविष्य द्रष्टा होता ही है। महन्त जी ने 1932 में ही महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद की नींव डालकर उस शिक्षा व्यवस्था का बीजारोपड़ किया, जिससे निकलने वाला युवा भारतीय हो, राष्ट्रीय हो, अध्यात्मिक हो, धर्मप्रवण हो, संस्कारित हो और राष्ट्र एवं समाज को आगे ले जाने वाला हो। परिणामतः आजाद भारत में महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद की शिक्षण संस्थाओं ने उनकी इस अवधारणा को प्रमाणित किया। वास्तव में शिक्षा ही विकृत से संस्कृति की ओर बढ़ाती है तथा सदाचरण, सदचिन्तन, नैतिकता एवं योग्य विचार भूमि की आधारशिला तैयार करती है। देश की शिक्षा जितनी पवित्र होगी, देश उतना पवित्र होगा। शिक्षा और जीवन का लक्ष्य एक ही है और वह है ब्रह्म की प्राप्ति, मोक्ष की प्राप्ति, मुक्ति और विनम्रता की प्राप्ति। शिक्षा अमरत्व प्रदान करती है। शिक्षा से पात्रता मिलती है। शिक्षा जीवन का मार्ग प्रशस्त करती है। शिक्षा आत्मबोध करती है। शिक्षा आत्मगौरव, आत्म सम्मान पैदा कराती है। शिक्षा से अपनी परम्परा अपनी संस्कृति पुर्न प्रतिष्ठा होती है। ऐसे में शिक्षा न केवल धर्म है, वह राष्ट्र धर्म भी है, समाज धर्म भी है और सेवा भी है। स्वास्थ्य के बिना हम स्वयं, परिवार, समाज, राष्ट्र एवं ईश्वर के लिए कुछ भी नहीं कर सकते, सब कुछ करने का साधन स्वस्थ्य मन एवं शरीर है और इस लिए शिक्षा के साथ–साथ स्वस्थ्य भी धर्म और सेवा का अभिन्न अंग है। अतः शिक्षा जितनी पवित्र होगी, विचार उतना पवित्र होगा, समाज उतना पवित्र होगा और संस्कृति और धर्म की स्थापना होगी तथा भ्रष्टाचार, अपराध, बिमारी, गरीबी इत्यादि विकृतियों का स्वतः विनाश होगा तथा आज के युग में शिक्षा और स्वास्थ्य धर्म भी है और सेवा भी है।

विशिष्ट वक्ता दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 वी0के0 सिंह ने कहा कि गोरखपुर में विश्वविद्यालय की स्थापना श्रीगोरक्षपीठ की देन है। गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज एवं महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज द्वारा गोरखपुर विश्वविद्यालय की स्थापना के लिए अपने दो महाविद्यालयों को दान दे दिया गया। उनके प्रत्यनों से तत्कालीन प्रदेश शासन ने इस विश्वविद्यालय की स्थापना की। परिणामतः आज पूर्वी उ0प्र0 में उच्च शिक्षा की लौ प्रज्वलित हो रही है। शिक्षा और स्वास्थ्य के क्षेत्र में इस पीठ का योगदान अद्धितीय है।

प्राचीन इतिहास विभाग के प्रो0 ईश्वरशरण विश्वकर्मा ने कहा कि जब सरकार द्वारा शिक्षा और स्वास्थ्य की सेवाएं नगरों तक सीमित थी उस समय भारत–नेपाल सीमा पर जंगल के बीच चौक बाजार में इण्टर कालेज की स्थापना श्रीगोरक्षपीठ की शिक्षा के प्रति दूर–दृष्टि का प्रमाण था। अगर वह इण्टर कालेज न होता तो आज उस पिछड़े क्षेत्र के गरीब परिवार का विद्यार्थी विश्वविद्यालय का प्रोफेसर न होता।

दिगम्बर आखाड़ा के महन्त सुरेशदास जी महाराज ने कहा कि गोरक्षपीठ भारत ही नहीं पूरी दुनियॉ में धार्मिक मठ मन्दिरों एवं पीठों के लिए आदर्श है। इस पीठ ने लोक कल्याण में ही ईश्वर की उपासना की है। अपने ईष्ट का दर्शन यह पीठ

असहायों और पीड़ितों में करता है। इस पीठ के पीठाधीश्वर मन्दिर की चाहरदिवारी मे बन्द नहीं रहते बल्कि जनता के बीच प्रतिदिन रहकर उनकी पीड़ा सुनते हैं, उनके सुख–दुःख में शामिल होते है और उनके दुःख–दर्द को कम करने में उनके साथ खड़े रहते हैं। ऐसी इस पीठ ने ऐसी पीड़ितों, असहायों, गरीबों के दरवाजे तक शिक्षा और चिकित्सा पहुँचाया है। निःसंदेश इससे बड़ा सेवा और धर्म और कुछ नहीं हो सकता।

प्रस्तावकी रखते हुए महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद के वरिष्ठ उपाध्यक्ष एवं कुलपति प्रो0 यू0पी0 सिंह ने कहा कि महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद लगभग चार दर्जन संस्थाएं आज पूर्वी उ0प्र0 में शिक्षा और स्वास्थ्य के क्षेत्र में प्रतिमान स्थापित किये हुए है। गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त जी महाराज की प्रेरणा से शिक्षण संस्थाएं निःशुल्क स्वास्थ्य केन्द्र चलाती है, गाँवों को गोद लेकर वहॉ शिक्षा और स्वास्थ्य के प्रति जनजागरण अभियान चलाती हैं। शिक्षा और स्वास्थ्य को इस पीठ ने सेवा और धर्म मानकर अपनी संस्थाओं का विकास किया है, जिसका प्रभाव पूर्वी उ0प्र0 के समाज में स्पष्ट देखा जा सकता है।

पुण्यतिथि समारोह में आज

युगपुरूष ब्रह्मलीन महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज की 48वीं तथा राष्ट्रसंत ब्रह्मलीन महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज की तृतीय पुण्यतिथि समारोह के अन्तर्गत कल **09 सितम्बर,2017** को प्रातः 10.30 बजे **'महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज की श्रद्धांजलि'** महाराणा शिक्षा परिषद के सभी संस्थाओं , सामाजिक–सांस्कृतिक एवं व्यापारिक की ओर से।

मुख्य अतिथि – श्री हृदय नारायण दीक्षित, विधानसभा अध्यक्ष, उ0प्र0
अध्यक्षता– गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त योगी आदित्यनाथ जी महाराज, माननीय उत्तर प्रदेश सरकार
अपराह्न 3.00 बजे से सायं 6.00 बजे तक वाल्मीकि रामायण पर आधारित **'श्रीराम कथा ज्ञान–यज्ञ' का पूर्णाहुति।**

समारोह का शुभारम्भ दोनों ब्रह्मलीन महाराज जी को पुष्पांजलि, वैदिक मंगलाचरण एवं गोरक्षाष्टक पाठ के साथ हुआ। महाराणा प्रताप पालिटेक्निक, गुरू श्री गोरक्षनाथ कालेज आफ नर्सिंग, मीराबाई महिला छात्रावास एवं गोरखनाथ संस्कृत विद्यापीठ के प्राचार्य, प्रधानाचार्यो एवं शिक्षकों ने माल्यार्पण के साथ अतिथियों का स्वागत किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ0 अविनाश प्रताप सिंह एवं आभार प्रधानाचार्य श्री पाटेश्वरी सिंह ने किया।

कार्यक्रम में रामानन्दाचार्य स्वामी रामानन्द दास जी महाराज, महन्त शिवनाथ जी, श्री रामशंकरदास जी, ब्रह्मचारीदास लाल जी, महन्त शान्तिनाथ जी, योगी कमलनाथ जी, महन्त मिथलेशनाथ जी, महन्त रविन्द्रदास जी, महन्त प्रेमदास जी, महन्त राममिलनदास जी, महन्त पंचानन पुरी जी आदि उपस्थित थे।

अखण्ड ज्योति